याकूब

1 याकूब का, जो परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का
दास है, संतों के बारहों कुलों को नमस्कार पहुँचे जो
समूचे संसार में फैले हुए हैं।

विश्वास और विवेक

2हे मेरे भाइयों, जब कभी तुम तरह तरह की परीक्षाओं
में पड़ो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो। 3क्योंकि तुम
यह जानते हो कि तुम्हारा विश्वास जब परीक्षा में सफल
होता है तो उससे धैर्य पूर्ण सहन शक्ति उत्पन्न होती है।
4और वह धैर्य पूर्ण सहन शक्ति एक ऐसी पूर्णता को जन्म
देती है जिससे तुम ऐसे सिद्ध बन सकते हो जिनमें कोई
कमी नहीं रह जाती है। 5सो यदि तुममें से किसी में विवेक
की कमी है तो वह उसे परमेश्वर से माँग सकता है। वह
सभी को प्रसन्नता पूर्वक उदारता के साथ देता है। 6बस
विश्वास के साथ माँगा जाये। थोड़ा सा भी संदेह नहीं
होना चाहिये। क्योंकि जिसको संदेह होता है, वह सागर
की उस लहर के समान है जो हवा से उठती है और
थरथराती है। 7ऐसे मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिये
कि उसे प्रभु से कुछ भी मिल पायेगा। 8ऐसे मनुष्य का मन
तो दुविधा से ग्रस्त है। वह अपने सभी कर्मों में अस्थिर
रहता है।

सच्चा धन

9साधारण परिस्थितियों वाले भाई को गर्व करना चाहिये
कि परमेश्वर ने उसे आत्मा का धन दिया है। 10और धनी
भाई को गर्व करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे नम्रता दी
है। क्योंकि उसे तो घास पर खिलने वाले फूल के समान
झड़ जाना है। 11सूरज कड़कड़ाती धूप लिये उगता है और
पौधों को सुखा डालता है। उनकी फूल पत्तियाँ झड़ जाती हैं
और सुन्दरता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार धनी व्यक्ति
भी अपनी भाग दौड़ के साथ समाप्त हो जाता है।

परमेश्वर परीक्षा नहीं लेता

12वह व्यक्ति धन्य है जो परीक्षा में अटल रहता है क्योंकि
परीक्षा में खरा उतरने के बाद वह जीवन के उस विजय
मुकुट को धारण करेगा, जिसे परमेश्वर ने अपने प्रेम
करने वालों को देने का वचन दिया है। 13परीक्षा की घड़ी
में किसी को यह नहीं कहना चाहिये कि "परमेश्वर मेरी
परीक्षा ले रहा है," क्योंकि बुरी बातों से परमेश्वर को कोई
लेना देना नहीं है। वह किसी की परीक्षा नहीं लेता। 14हर
कोई अपनी ही बुरी इच्छाओं के भ्रम में फँस कर परीक्षा में
पड़ता है। 15फिर जब वह इच्छा गर्भवती होती है तो पाप
पूरा बढ़ जाता है और वह मृत्यु को जन्म देता है।

16सो मेरे प्रिय भाइयों, धोखा मत खाओ। 17प्रत्येक उत्तम
दान और परिपूर्ण उपहार ऊपर से ही मिलते हैं। और वे
उस परम पिता के द्वारा जिसने स्वर्गीय प्रकाश को जन्म
दिया है, नीचे लाये जाते हैं। वह नक्षत्रों की गतिविधि से
उत्पन्न छाया से कभी बदलता नही है। 18सत्य के सुसंदेश के
द्वारा अपनी संतान बनाने के लिये उसने हमें चुना। ताकि
हम सभी प्राणियों के बीच उसकी फ़सल के पहले फल
सिद्ध हों।

सुनना और उस पर चलना

19हे मेरे प्रिय भाइयों, याद रखो, हर किसी को तत्परता
के साथ सुनना चाहिये, बोलने में शीघ्रता मत करो, क्रोध
करने में उतावली मत बरतो। 20क्योंकि मनुष्य के क्रोध से
परमेश्वर की धार्मिकता नहीं उपजती। 21हर
घिनौने आचरण और चारों ओर फैली दुष्टता से दूर रहो।
तथा नम्रता के साथ तुम्हारे हृदयों में रोपे गये परमेश्वर
के वचन को ग्रहण करो जो तुम्हारी आत्माओं को
उद्धार दिला सकता है।

22परमेश्वर की शिक्षा पर चलने वाले बनो, न कि
केवल उसे सुनने वाले। यदि तुम केवल उसे सुनते भर हो

तो तुम अपने आपको छल रहे हो। 23 क्योंकि यदि कोई परमेश्वर की शिक्षा को सुनता तो है और उस पर चलता नहीं है, तो वह उस पुरुष के समान ही है जो अपने भौतिक मुख को दर्पण में देखता भर है। 24वह स्वयं को अच्छी तरह देखता है, पर जब वहाँ से चला जाता है तो तुरंत भूल जाता है कि वह कैसा दिख रहा था। 25किन्तु जो परमेश्वर की उस सम्पूर्ण व्यवस्था को निकटता से देखता है, जिससे स्वतन्त्रता प्राप्त होती है और उसी पर आचरण भी करता रहता है, और सुन कर उसे भूले बिना अपने आचरण में उतारता रहता है, वही अपने कर्मों के लिये धन्य होगा।

भक्ति का सच्चा मार्ग

26यदि कोई सोचता है कि वह भक्त है और अपनी जीभ पर कस कर लगाम नहीं लगाता तो वह धोखे में है। उसकी भक्ति निरर्थक है। 27परम पिता परमेश्वर के सामने सच्ची और शुद्ध भक्ति वही है जिसमें अनाथों और विधवाओं की उनके दुःख दर्द में सुधि ली जाये और स्वयं को कोई सांसारिक कलंक न लगने दिया जाये।

सबसे प्रेम करो

2 हे मेरे भाइयो, हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह में जो तुम्हारा विश्वास है, वह पक्षपातपूर्ण न हो। 2कल्पना करो तुम्हारी सभा में कोई व्यक्ति सोने की अँगूठी और भव्य वस्त्र धारण किये हुए आता है। और तभी मैले कुचैले कपड़े पहने एक निर्धन व्यक्ति भी आता है। 3और तुम जिसने भव्य वस्त्र धारण किये हैं, उसको विशेष महत्त्व देते हुए कहते हो, "यहाँ इस उत्तम स्थान पर बैठो", जबकि उस निर्धन व्यक्ति से कहते हो, "वहाँ खड़ा रह" या "मेरे पैरों के पास बैठ जा।" 4ऐसा करते हुए क्या तुमने अपने बीच कोई भेद-भाव नहीं किया और बुरे विचारों के साथ न्यायकर्ता नहीं बन गये?

5हे मेरे प्यारे भाइयो, सुनो क्या परमेश्वर ने संसार की आँखों में उन निर्धनों को विश्वास में धनी और उस राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में नहीं चुना, जिसका उसने, जो उसे प्रेम करते हैं, देने का वचन दिया है। 6किन्तु तुमने तो उस निर्धन व्यक्ति के प्रति घृणा दर्शायी है। क्या ये धनिक व्यक्ति वे ही नहीं हैं, जो तुम्हारा शोषण करते है और तुम्हें कचहरियों में घसीट ले जाते है? 7क्या ये वे ही नहीं हैं, जो मसीह के उस उत्तम नाम की निन्दा करते हैं, जो तुम्हें दिया गया है?

8यदि तुम शास्त्र में प्राप्त होने वाली इस उच्चतम व्यवस्था का सचमुच पालन करते हो, "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो"* तो तुम अच्छा ही करते हो। 9किन्तु यदि तुम पक्षपात दिखाते हो तो तुम पाप कर रहे हो। फिर तुम्हें व्यवस्था के विधान को तोड़ने वाला ठहराया जायेगा। 10क्योंकि कोई भी यदि समग्र व्यवस्था का पालन करता है और एक बात में चूक जाता है तो वह समूची व्यवस्था के उल्लंघन का दोषी हो जाता है। 11क्योंकि जिसने यह कहा था, "व्यभिचार मत करो"* उस ही ने यह भी कहा था, "हत्या मत करो।"* सो यदि तुम व्यभिचार नहीं करते किन्तु हत्या करते हो तो तुम व्यवस्था को तोड़ने वाले हो। 12तुम उन्हीं लोगों के समान बोलो और उन ही के जैसा आचरण करो जिनका उस व्यवस्था के अनुसार न्याय होने जा रहा है, जिससे छुटकारा मिलता है। 13जो दयालु नहीं है, उसके लिये परमेश्वर का न्याय भी बिना दया के ही होगा। किन्तु दया न्याय पर विजयी है।

विश्वास और सत् कर्म

14हे मेरे भाइयो, यदि कोई व्यक्ति कहता है कि वह विश्वासी है तो इसका क्या लाभ जब तक कि उसके कर्म विश्वास के अनुकूल न हों? ऐसा विश्वास क्या उसका उद्धार कर सकता है? 15यदि भाइयों और बहनों को वस्त्रों की आवश्यकता हो, उनके पास खाने तक को न हो 16और तुममें से ही कोई उनसे कहे "शांति से जाओ, परमेश्वर तुम्हारा कल्याण करे, अपने को गरमाओ तथा अच्छी प्रकार भोजन करो" और तुम उनकी देह की आवश्यकताओं की वस्तुएँ उन्हें न दो तो फिर इसका क्या मूल्य है? 17इसी प्रकार यदि विश्वास के साथ कर्म नहीं है तो वह अपने आप में निष्प्राण है।

18किन्तु कोई कह सकता है, "तुम्हारे पास विश्वास है, जबकि मेरे पास कर्म है अब तुम बिना कर्मों के अपना विश्वास दिखाओ और मैं तुम्हें अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा दिखाऊँगा।" 19क्या तुम विश्वास करते हो

अपने ... हो लैव्य. 19:18
व्यभिचार मत करो निर्गमन 20:14; व्यवस्था. 5:18
हत्या मत करो निर्गमन 20:13; व्यवस्था. 5:17

कि परमेश्वर केवल एक है? अदभुत! दुष्टात्माएँ यह विश्वास करती है कि परमेश्वर है और वे काँपती रहती हैं।

20अरे मूर्ख! क्या तुझे प्रमाण चाहिये कि कर्म रहित विश्वास व्यर्थ है? 21क्या हमारा पिता इब्राहीम अपने कर्मों के आधार पर ही उस समय धर्मी नहीं ठहराया गया था जब उसने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर अर्पित कर दिया था? 22तू देख कि उसका वह विश्वास उसके कर्मों के साथ ही सक्रिय हो रहा था। और उसके कर्मो से ही उसका विश्वास परिपूर्ण किया गया था। 23इस प्रकार शास्त्र का यह कहा पूरा हुआ था, "इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और विश्वास के आधार पर ही वह धर्मी ठहरा"* और इसी से वह "परमेश्वर का मित्र"* कहलाया। 24तुम देखो कि केवल विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मो से ही व्यक्ति धर्मी ठहरता है।

25इसी प्रकार राहब वेश्या भी क्या उस समय अपने कर्मों से धर्मी नहीं ठहरायी गयी, जब उसने दूतों को अपने घर में शरण दी और फिर उन्हें दूसरे मार्ग से कहीं भेज दिया।

26इस प्रकार जैसे बिना आत्मा का देह मरा हुआ है, वैसे ही कर्म विहीन विश्वास भी निर्जीव है!

वाणी का संयम

3 हे मेरे भाइयों, तुममें से बहुत से को शिक्षक बनने की इच्छा नहीं कर नी चाहिये। तुम जानते ही हो कि हम शिक्षकों का और अधिक कड़ाई के साथ न्याय किया जायेगा। 2मैं तुम्हें ऐसे इसलिये चेता रहा हूँ कि हम सबसे बहुत सी भूल होती ही रहती हैं। यदि कोई बोलने में कोई भी चूक न करे तो वह एक सिद्ध व्यक्ति है तो फिर ऐसा कौन है जो उस पर पूरी तरह काबू पा सकता हैं? 3हम घोड़ों के मुँह में इसलिये लगाम लगाते हैं कि वे हमारे बस में रहें। और इस प्रकार उनके समूचे देह को हम वश में कर सकते हैं। 4अथवा जलयानों का उदाहरण भी लिया जा सकता है। देखो, चाहे वे कितने ही बड़े होते हैं और शक्तिशाली हवाओं द्वारा चलाये जाते है, किन्तु एक छोटी सी पतवार से उनका नाविक उन्हें जहाँ कहीं ले जाना चाहता है, उन पर काबू पाकर उन्हें ले जाता है। 5इसी प्रकार जीभ, जो देह का एक छोटा सा अंग है, बड़ी बड़ी बातें कर डालने की डींगे मारती है।

अब तनिक सोचो एक जरा सी लपट समूचे जंगल को जला सकती है। 6हाँ, जीभ: एक लपट है। यह बुराई का एक पूरा संसार है। यह जीभ हमारे देह के अंगों में एक ऐसा अंग है, जो समूचे देह को भ्रष्ट कर डालता है और हमारे समूचे जीवन चक्र में ही आग लगा देता है। यह जीभ नरक की आग से धधकती रहती है। 7देखो, हर प्रकार के हिंसक पशु, पक्षी, रेंगने वाले जीव जंतु, पानी में रहने वाले प्राणी मनुष्य द्वारा वश में किये जा सकते हैं और किये भी गए हैं। 8किन्तु जीभ को कोई मनुष्य वश में नहीं कर सकता। यह घातक विष से भरी एक ऐसी बुराई है जो कभी चैन से नहीं रहती। 9हम इसी से अपने प्रभु और परमेश्वर की स्तुति करते हैं और इसी से लोगों को जो परमेश्वर की समरूपता में उत्पन्न किये गये हैं, कोसते भी हैं। 10एक ही मुँह से आशीर्वाद और अभिशाप दोनों निकलते हैं। मेरे भाइयों, ऐसा तो नहीं होना चाहिये। 11सोते के एक ही मुहाने से भला क्या मीठा और खारा दोनों तरह का जल निकल सकता है। 12मेरे भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ पर जैतून या अंगूर की लता पर कभी अंजीर लगते हैं? निश्चय ही नहीं। और न ही खारे स्रोत से कभी मीठा जल निकल पाता है।

सच्चा विवेक

13भला तुममें, ज्ञानी और समझदार कौन है? जो है, उसे अपने व्यवहार से यह दिखाना चाहिये कि उसके कर्म उस सज्जनता के साथ किये गये हैं जो ज्ञान से जुड़ी है। 14किन्तु यदि तुम लोगों के हृदयों में भयंकर ईर्ष्या और स्वार्थ भरा हुआ है, तो अपने ज्ञान का ढोल मत पीटो। ऐसा करके तो तुम सत्य पर पर्दा डालते हुए असत्य बोल रहे हो। 15ऐसा "ज्ञान" तो ऊपर अर्थात् स्वर्ग से, प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह तो भौतिक है। आत्मिक नहीं है। तथा शैतान का है। 16क्योंकि जहाँ ईर्ष्या और स्वार्थ पूर्ण महत्वकाँक्षाएँ रहती हैं, वहाँ अव्यवस्था और हर प्रकार की बुरी बातें रहती हैं। 17किन्तु स्वर्ग से आने वाला ज्ञान सबसे पहले तो पवित्र होता है, फिर शांतिपूर्ण, सहनशील, सहज–प्रसन्न, करुणा–पूर्ण होता है। और उससे उत्तम कर्मों की फ़सल उपजती है। वह पक्षपात–रहित और सच्चा भी होता है। 18शांति के लिए काम करने वाले लोगों

इब्राहीम ... ठहरा उत्पत्ति 15:6
परमेश्वर ... मित्र 2 इति. 20:7; यशा. 41:8

को ही धार्मिक जीवन का फल प्राप्त होगा यदि उसे शांतिपूर्ण वातावरण में बोया गया है।

परमेश्वर को समर्पित हो जाओ

4 तुम्हारे बीच लड़ाई–झगड़े क्यों होते हैं? क्या उनका कारण तुम्हारे अपने ही भीतर नहीं है? तुम्हारी वे भोग–विलासपूर्ण इच्छाएँ ही जो तुम्हारे भीतर निरन्तर द्वन्द्व करती रहती हैं, क्या उन्हीं से ये पैदा नहीं होते? 2तुम लोग चाहते तो हो किन्तु तुम्हें मिल नहीं पाता। तुम में ईर्ष्या है और तुम दूसरों की हत्या करते हो, फिर भी जो चाहते हो, प्राप्त नहीं कर पाते। और इसीलिये लड़ते झगड़ते हो। अपनी इच्छित वस्तुओं को तुम प्राप्त नहीं कर पाते क्योंकि तुम उन्हें परमेश्वर से नहीं माँगते। 3और जब माँगते भी हो तो तुम्हारा उद्देश्य अच्छा नहीं होता। क्योंकि तुम उन्हें अपने भोग–विलास में ही उड़ाने को माँगते हो। 4अरे, विश्वास विहीन लोगो! क्या तुम नहीं जानते कि संसार से प्रेम करना परमेश्वर से घृणा करने जैसा ही है? जो कोई इस दुनिया से दोस्ती रखना चाहता है, वह अपने आपको परमेश्वर का शत्रु बनाता है। 5अथवा क्या तुम ऐसा सोचते हो कि शास्त्र ऐसा व्यर्थ में ही कहता है कि, "परमेश्वर ने हमारे भीतर जो आत्मा दी है, वह ईर्ष्या पूर्ण इच्छाओं से भरी रहती है।" 6किन्तु परमेश्वर ने हम पर अत्यधिक अनुग्रह दर्शाया है, इसीलिए शास्त्र में कहा गया है, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोधी है, जबकि दीन जनों पर अपनी अनुग्रह दर्शाता है।"* 7इसीलिए अपने आपको परमेश्वर के अधीन कर दो। शैतान का विरोध करो, वह तुम्हारे सामने से भाग खड़ा होगा। 8परमेश्वर के पास आओ, वह भी तुम्हारे पास आयेगा। अरे पापियो! अपने हाथ शुद्ध करो और अरे सन्देह करने वालो, अपने हृदयों को पवित्र करो। 9 शोक करो, विलाप करो और दुःखी होओ। हो सकता है तुम्हारे ये अट्टहास शोक में बदल जायें और तुम्हारी यह प्रसन्नता विषाद में बदल जाये। 10प्रभु के सामने स्वयं को नवाओ। वह तुम्हें ऊँचा उठायेगा।

न्यायकर्त्ता तुम नहीं हो

11हे भाइयो, एक दूसरे के विरोध में बोलना बंद करो। जो अपने ही भाई के विरोध में बोलता है, अथवा उसे दोषी ठहराता है, वह व्यवस्था के ही विरोध में बोलता है और व्यवस्था को दोषी ठहराता है। और यदि तुम व्यवस्था पर दोष लगाते हो तो व्यवस्था के विधान का पालन करने वाले नहीं रहते वरन उसके न्यायकर्त्ता बन जाते हो। 12व्यवस्था के विधान को देने वाला और उसका न्याय करने वाला तो बस एक ही है। और वही रक्षा कर सकता है और वही नष्ट करता है। तो फिर अपने साथी का न्याय करने वाले तुम कौन होते हो?

अपना जीवन परमेश्वर को चलाने दो

13ऐसा कहने वालो सुनो, "आज या कल हम इस या उस नगर में जाकर साल–एक भर वहाँ व्यापार में धन लगा बहुत सा पैसा बना लेंगे।" 14किन्तु तुम तो इतना भी नहीं जानते कि कल तुम्हारे जीवन का क्या बनेगा! देखो, तुम तो उस धुंध के समान हो जो थोड़ी सी देर को उठती है और फिर खो जाती है। 15सो इसके स्थान पर तुम्हें तो सदा यही कहना चाहिये "यदि प्रभु ने चाहा तो हम जीयेंगे और यह या वह करेंगे।" 16किन्तु स्थिति तो यह है कि तुम तो अपने आडम्बरों के लिये स्वयं पर गर्व करते हो। ऐसे सभी गर्व बुरे हैं। 17तो फिर यह जानते हुए भी कि यह उचित है, उसे नहीं करना पाप है।

स्वार्थी धनी दण्ड के भागी होंगे

5 धनवानो सुनो, जो विपत्तियाँ तुम पर आने वाली हैं, उनके लिये रोओ और ऊँचे स्वर में विलाप करो। 2तुम्हारा धन सड़ चुका हैं। तुम्हारी पोशाकें कीड़ों द्वारा खा ली गयी हैं। 3तुम्हारा सोना चाँदी जंग लगने से बिगड़ गया है। उन पर लगी जंग तुम्हारे विरोध में गवाही देगी और तुम्हारे मांस को अग्नि की तरह चट कर जायेगी। तुमने अपना खजाना उस आयु में एक ओर उठा कर रख दिया है जिसका अंत आने को है। 4देखो, तुम्हारे खेतों में जिन मजदूरों ने काम किया, तुमने उनका मेहनताना रोक रखा है। वही मेहनताना चीख पुकार कर रहा है और खेतों में काम करने वालों की वे चीख पुकारें सर्वशक्तिमान प्रभु के कानों तक जा पहुँची हैं। 5धरती पर तुमने विलासपूर्ण जीवन जीया है और अपने आपको भोग–विलासों में डुबोये रखा है। इस प्रकार तुमने अपने

परमेश्वर ... है नीति. 3:34

आपको वध किये जाने के दिन के लिये पाल-पोसकर हृष्ट-पुष्ट कर लिया है। 6तुमने भोले लोगों को दोषी ठहराकर उनके किसी प्रतिरोध के अभाव में ही उनकी हत्याएँ कर डालीं।

धैर्य रखो

7सो भाइयो, प्रभु के फिर से आने तक धीरज धरो। उस किसान का ध्यान धरो जो अपनी धरती की मूल्यवान उपज के लिये बाट जोहता रहता है। इसके लिये वह आरम्भिक वर्षा से लेकर बाद की वर्षा तक निरन्तर धैर्य के साथ बाट जोहता रहता है। 8तुम्हें भी धैर्य के साथ बाट जोहनी होगी। अपने हृदयों को दृढ़ बनाये रखो क्योंकि प्रभु का दुबारा आना निकट ही है। 9हे भाइयों, आपस में एक दूसरे की शिकायतें मत करो ताकि तुम्हें अपराधी न ठहराया जाये। देखो, न्यायकर्त्ता तो भीतर आने के लिये द्वार पर ही खड़ा है। 10हे भाइयों, उन भविष्यवक्ताओं को याद रखो जिन्होंने प्रभु के लिये बोला। वे हमारे लिए यातनाएँ झेलने और धैर्य पूर्ण सहनशीलता के उदाहरण हैं। 11ध्यान रखना, हम उन की सहनशीलता के कारण उनको धन्य मानते हैं। तुमने अय्यूब के धीरज के बारे में सुना ही है और प्रभु ने उसे उसका जो परिणाम प्रदान किया, उसे भी तुम जानते ही हो कि प्रभु कितना दयालु और करुणापूर्ण है।

सोच विचार कर बोलो

12हे मेरे भाइयो, सबसे बड़ी बात यह है कि स्वर्ग की अथवा धरती की या किसी भी प्रकार की कसमें खाना छोड़ो। तुम्हारी "हाँ", हाँ होनी चाहिये, और "ना" ना होनी चाहिये। ताकि तुम पर परमेश्वर का दण्ड न पड़े।

प्रार्थना की शक्ति

13यदि तुममें से कोई विपत्ति में पड़ा है तो उसे प्रार्थना करनी चाहिये और यदि कोई प्रसन्न है तो उसे स्तुति-गीत गाने चाहिये। 14यदि तुम्हारे बीच कोई रोगी है तो उसे कलीसिया के अगुवाओं को बुलाना चाहिये कि वे उसके लिये प्रार्थना करें और उस पर प्रभु के नाम में तेल मलें 15विश्वास के साथ की गयी प्रार्थना से रोगी निरोग होता है। और प्रभु उसे उठाकर खड़ा कर देता है। यदि उसने पाप किये हैं तो प्रभु उसे क्षमा कर देगा। 16इसलिये अपने पापों को परस्पर स्वीकार और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो ताकि तुम भले चंगे हो जाओ। धार्मिक व्यक्ति की प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण होती है। 17एलिय्याह एक मनुष्य ही था ठीक हमारे जैसा। उसने तीव्रता के साथ प्रार्थना की कि वर्षा न हो और साढ़े तीन साल तक धरती पर वर्षा नहीं हुई। 18उसने फिर प्रार्थना की और आकाश में वर्षा उमड़ पड़ी तथा धरती ने अपनी फसलें उपजायीं।

एक आत्मा की रक्षा

19हे मेरे भाइयो, तुममें से कोई यदि सत्य से भटक जाये और उसे कोई फिर लौटा लाये तो उसे यह पता होना चाहिये कि 20जो किसी पापी को पाप के मार्ग से लौटा लाता है वह उस पापी की आत्मा को अनन्त मृत्यु से बचाता है और उसके अनेक पापों के क्षमा किये जाने का कारण बनता है।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html